यूराशिया तरंग

युवा विशेषांक

वर्ष ५, अंक ११, मई २०१२

यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष श्री युशुन मासुनागा जी द्वारा युवकों को प्रदान किया गया मार्गनिर्देशनः

अपने-अपने देश के युवकों को राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत बनाना होगा। उनमे अपने जन्म लेने वाले देश के प्रति कृतज्ञ होने की भावना जागृत करानी है। देश के प्रति क्या करने से गुण लौटाया जा सकता है? यही रेयूकाई के युवकों की जिम्मेवारी और कर्तव्य है। अपनी जिम्मेवारी और कर्तव्य पूरा कर परिणामों के प्रति आशा लेने में उन्हे लगाने की बात आज महत्वपूर्ण है। कब शुरू करना है, कहने पर आज से ही शुरू करना है। आज ही महत्वपूर्ण होता है। आज ही खुद को तैयार करना पड़ेगा, कल नहीं। प्रकाशमान उजियाले सूर्य की तरह होकर सभी पर प्रभाव डालने वाले, आशा दे सकने वाले युवा का स्वरूप बनना होगा।

- ❖ अब से युवा वर्ग देशभक्ति की भावना लेकर नेतृत्व लेते हुए पुस्तों-पुस्त तक युवा भावना लेकर कार्यान्वयन करने का मौका प्राप्त करें।
- ❖ अपने रहने वाले समाज के प्रति, जन्म लेने वाले देश के प्रति, यूराशिया महाद्वीप के प्रति क्या नहीं करने से नहीं होगा, इसका जवाब दे सकने वाला युवा नहीं बनने से नहीं होगा।
- ❖ युवकों की अच्छी तरह परवरिश करें। युवकों का लक्ष्य क्या है? इसे नहीं समझने से नहीं होगा।
- ❖ युवा वर्ग को उत्साहित होकर दत्तचित्त रूप से अपने-अपने देश के विकास के लिए केवल अपनी शक्ति से ही मात्र नहीं, बल्कि अपने अभ्यास के पुण्यफल की शक्ति से कार्यान्वयन कर यूराशिया महाद्वीप को बचाते जाने वाला युवा नहीं बनने से नहीं होगा।
- ❖ अपने देश को बचाने, अपने बुरे चरित्र को परिवर्त्तन करने और महान् रेयूकाई शिक्षा का दैनिक कार्यान्वयन कर स्वयं द्वारा औरों को प्रभावित कर लोगों के मन को परिवर्त्तित करने वाला युवा बनें।
- ❖ युवक केवल कान से सुनते हैं, सुनी हुई बातों का क्रियान्वयन नहीं करते। महत्वपूर्ण बातें सुनते हुए भी आत्मा में अन्य बातें सोचते रहते हैं। इसलिए जितना भी कान से सुनकर आत्मा में डालने की सोचें, लेकिन वह आत्मा में जाता नहीं है। उनका कार्यान्वयन नहीं होता, ऐसा ही होता है। उसे कार्यान्वयन कराने के लिए महागुरू कोतानी जी कड़ाई से ऊंची आवाज में लोगों का चरित्र सुधारने के लिए गाली किया करती थीं, हमेशा सचेत कराया करती थीं। यही दया है, गाली करना दया है, ऐसा कहा करती थीं, क्यों कि उस व्यक्ति के बुरे चरित्र को अच्छा बनाने के लिए गाली किया करती थीं। जापान में महागुरू कोतानी जी ने युवकों को जिम्मेवारी का एहसास कराने के लिए उनके अभ्यास स्थल के रूप में मिरोकुसान का निर्माण किया। युवकों के प्रति महागुरू कोतानी जी ने यहां तक आशा लेकर देश के बारे में सोचने, विश्वशांति की कामना करने, समाज की ओर लौटकर सामाजिक संकट के समय सेवा करने एवम् उसे कार्यान्वयन में उतारने के लिए युवा विभाग का गठन किया था।
- ❖ यूराशिया रेयूकाई में भी युवा विभाग, महिला विभाग और म्योईचिकाई (बाल-बालिकाओं का समूह) की शुरूआत हो चुकी है। युवावर्ग को युवा के स्थान से इस देश एवं यूराशिया रेयूकाई महाद्वीप को खींचने वाला इंजन नहीं बनने से नहीं होगा।

यूराशिया रेयूकाई प्रधान कार्यालय का उद्घाटन

यूराशिया महाद्वीप में रेयूकाई शिक्षा का विकास और विस्तार कर विश्वशांति में योगदान कर सकने वाले वातावरण की सृष्टि एक दिन भी हो सके, जल्दी करने के लिए यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष श्री युशुन मासुनागा जी के कर कमलों-द्वारा विगत ८ फरवरी २०१२ को ५८, डा० पारसमणि सरणी, बंकिमनगर, वार्ड नं० ४१, सिलीगुड़ी-७३४००१, प० बंगाल, भारत में किया गया। सन् १९७० के दशक से यूराशिया महाद्वीप में शुरू हुई रेयूकाई शिक्षा की यात्रा भारत होते हुए नेपाल, म्यानमार और बांग्लादेश तक पहुंचने के कारण यूराशिया रेयूकाई में १६ लाख से भी ज्यादा रेयूकाई सदस्य क्रियाशील होने का महान मौका प्राप्त कर रहे हैं।

यह उद्घाटन समारोह केन्जीचुकी मिहाता, यूराशिया रेयूकाई की मिहाता तथा सम्पूर्ण यूराशिया रेयूकाई अंतर्गत की मिहाता शाखाओं की मिहाताएं विराजमान कराकर सम्पन्न किया गया। यूराशिया रेयूकाई के सदस्य और ज्यादा रेयूकाई शिक्षा का अभ्यास कर सकें, इसी उद्धेश्य से उसी दिन यूराशिया रेयूकाई सिलीगुड़ी संस्कृति केन्द्र की भी स्थापना की गयी। अब से सिलीगुड़ी क्षेत्र के रेयूकाई सदस्यों को रेयूकाई शिक्षा का अभ्यास कराने के लिए सहज स्थिति का निर्माण होगा। उक्त समारोह में भारत, नेपाल, म्यानमार और बांग्लादेश के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

यूराशिया रेयूकाई युवा विभाग की कार्य योजना

नाराः इस देश की भूमि पर जन्म लेने पर गर्व करते हुए राष्ट्र के प्रति कृतज्ञता लौटाने वाला युवा बनें।

लक्ष्यः युवकों को अच्छा मौका और अच्छा भविष्य, आशा की किरण लेने में लगाकर उत्साही बनाएं।

यूराशिया रेयूकाई के युवकों से अपील

१) इस देश की भूमि पर जन्म पाने के लिए गर्व कर सकने वाला व्यक्ति बनें।

२) अपने ज्ञान, दक्षता और कला को अपने देश में सदुपयोग करना चाहने वाला व्यक्ति बनें।

३) अभिभावक के प्रति कृतज्ञता लौटाने की भावना रखने वाला व्यक्ति बनें।

४) राष्ट्रीयता की भावना लेकर देश के प्रति कृतज्ञता लौटा सकने वाला व्यक्ति बनें।

५) सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र का कार्यान्वयन कर कार्यान्वयन कराने की भावना रहने वाला व्यक्ति बनें।

६) कर्म शुद्धिकरण की शिक्षा को स्वयं कार्यान्वयन करने की भावना रहने वाला व्यक्ति बनें और औरों को भी बनने में लगाएं।

७) दया की भावना लेकर केवल अपने लिए नहीं, बल्कि औरों की खुशी के लिए सदैव कार्य कर सकने वाला व्यक्ति बनें।

ओदाईमोकु प्रार्थना करने का अभ्यास
मिरिक, भारत

यूराशिया रेयूकाई के आयोजन में विगत ७ एवं ८ जनवरी २०१२ के दिन श्री लावांग तामांग के संयोजन में यूराशिया रेयूकाई भारत देश के विभिन्न क्षेत्रों के १०४ जनों की सहभागिता में दार्जिलिंग क्षेत्र के मिरिक में ओदाईमोकु प्रार्थना करने का अभ्यास कार्यक्रम संपन्न हुआ। यूराशिया रेयूकाई के प्रमुख सदस्यों को रेयूकाई शिक्षा के अभ्यास में ओदाईमोकु करने के अभ्यास के बारे में यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष श्री युशुन मासुनागा जी तथा मुमा श्रीमती हिरोको मासुनागा जी द्वारा प्रशिक्षण एवं मार्गनिर्देशन प्रदान किया गया। उस अभ्यास कार्यक्रम में यूराशिया रेयूकाई १५वीं शाखा २२वीं शाखा, २८वीं शाखा के मिहाता जिम्मेवार शिबुचो जी लोगों ने भी मार्गनिर्देशन एवं प्रशिक्षण दिया।

रेयूकाई एइको मासुनागा नेत्र अस्पताल उजियाले जीवन की ओर लौटाने हेतु क्रियाशील

रेयूकाई एइको मासुनागा नेत्र अस्पताल, बनेपा ने काठमांडू से पूर्व की ओर के पहाड़ी जिलों को लक्ष्य कर सेवा करने के अभियान को तीव्र रूप में आगे बढ़ाया है। विगत २२ फरवरी २००७ को अस्पताल के संरक्षक एवं यूराशिया रेयूकाई के संस्थापक अध्यक्ष श्री युशुन मासुनागा जी ने अस्पताल का उद्घाटन किया था। उस दिन से आज तक यह १ लाख ५ हजार ३१ जन नेत्र रोगियों को अस्पताल तथा शिविरों के माध्यम से यह अस्पताल सेवा प्रदान कर चुका है। भक्तपुर, काभ्रेपलांचोक, सिन्धुपाल्चोक, सिन्धुली सहित विभिन्न जिलों में समय-समय पर शिविरों के माध्यम से सेवा पहुंचाते हुए, आंखों की ज्योति खोने जा रहे असंख्य व्यक्तियों के लिए गांव-गांव में पहुंचकर यह उपचार करता आ रहा है। बी० पी० कोइराला लायंस नेत्र अध्ययन केन्द्र महाराजगंज के विशेष सहयोग में डा० शगुन नारायण जोशी, डा० मधु थापा, डा० गुलशन बहादुर श्रेष्ठ, डा० प्रगति गौतम, डा० इरिना कंसाकार अस्पताल के विकास में उल्लेखनीय सहयोग पहुंचाते आ रहे हैं। प्रति माह कम से कम तीन शिविरों का आयोजन कर समुदाय की ओर लौटकर समाज के लिए ज्यादा से ज्यादा योगदान पहुंचाने की भावना को कार्यान्वयन करने का मौका प्राप्त करने को अस्पताल परिवार ने गर्व के रूप में लिया है। अब तक दो हजार तीन सौ छह लोगों के मोतियाबिन्द की शल्यक्रिया संपन्न कर अंधियारे जीवन की ओर बढ़ रहे लोगों को उजियाले जीवन की ओर लौटाने का मौका प्राप्त हुआ है। अस्पताल का वर्तमान में अवस्थित भवन छोटा पड़ जाने के कारण रोगियों के प्रति क्षमायुक्त स्थिति बनने की बात को ध्यान में रखते हुए अस्पताल अतिरिक्त जमीन खरीदकर नए भवन का निर्माण कर रहा है। इसी क्रम में ३० अप्रैल २०१२ को अस्पताल के संरक्षक एवं यूराशिया रेयूकाई के संस्थापक अध्यक्ष श्री युशुन मासुनागा जी ने बनेपा में एक भव्य समारोह के बीच नए भवन का शिलान्यास किया। उक्त भवन का निर्माण पूरा होने के बाद दैनिक ३०० नेत्र-रोगियों को सेवा प्रदान करने का मौका प्राप्त हो सकेगा।

यूराशिया रेयूकाई काठमांडू संस्कृति केन्द्र का उद्घाटन

विश्वशांति में योगदान देने वाले ज्यादा से ज्यादा लोगों को तैयार करते जाने का महान् लक्ष्य लेकर प्रतिपादित महान रेयूकाई शिक्षा का अभ्यास करने के स्थल के रूप में यूराशिया रेयूकाई काठमांडू संस्कृति केन्द्र का उद्घाटन यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष श्री युशुन मासुनागा जी द्वारा १ फरवरी २०१२ के दिन सानेपा, ललितपुर स्थित यूराशिया रेयूकाई नेपाल कार्यालय के भवन में विधिवत किया गया। काठमांडू उपत्यका के बाहर की मिहाता शाखाओं के १६७ जन सहभागियों की उपस्थिति में आयोजित इस उद्घाटन समारोह में संस्थापक अध्यक्ष जी तथा मुमाजी द्वारा संस्कृति केन्द्र के महत्व तथा प्रयोग के संबन्ध में गहन मार्गनिर्देशन प्रदान किया गया। यूराशिया रेयूकाई १३वीं, १७वीं, २२वीं और २८ वीं शाखाओं के उपत्यका के अंतर्गत रहने वाले सदस्यों का लक्ष्य लेकर रेयूकाई शिक्षा का अभ्यास करने वाले स्थल के रूप में यह संस्कृति केन्द्र खोला गया है।

महागुरू किमी कोतानी जी का ४२वां पुण्यतिथि समारोह

६ फरवरी २०१२ के दिन इस्कान मंदिर परिसर, सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल, भारत में रेयूकाई के महागुरू किमी कोतानी जी के ४२वें पुण्यतिथि स्मरण समारोह का भव्य रूप में आयोजन किया गया। यूराशिया रेयूकाई द्वारा आयोजित उक्त समारोह में भारत, नेपाल, म्यानमार और बांग्लादेश के यूराशिया रेयूकाई लीडर्स एवं सदस्यों की उपस्थिति थी। उक्त समारोह में यूराशिया रेयूकाई के संस्थापक अध्यक्ष श्री युशुन मासुनागा जी द्वारा महागुरू किमी कोतानी जी के योगदान की व्याख्या के साथ ही महत्वपूर्ण मार्गनिर्देशन भी प्रदान किया गया। समारोह की शुरुआत में यूराशिया रेयूकाई के सदस्यों ने रक्तदान करने का मौका भी प्राप्त किया।

"हंसमुख चेहरे से अभिवादन, हंसमुख चेहरे से कृतज्ञता, हंसमुख चेहरे से प्रशंसा करने का मौका प्राप्त करता आ रहा हूँ।"

खुशी के अनुभव .....

मेरा नाम केदर नाथ मौर्य है। मुझे इस पवित्र संस्था में प्रवेश कराने वाले मेरे मिचिबिकी ओया सीता भुषाल (आचार्य) हैं और मेरे शिबुचो तथा शिक्षा सदस्य विष्णु प्रसाद घिमिरे हैं। मैं ३ मार्च २०११ को इस पवित्र संस्था में प्रवेश करने का मौका पाकर फिलहाल होजाशु के रूप में अभ्यास कर रहा हूँ। मैं और मेरे ओया एक ही कालेज के विद्यार्थी थे। इस संस्था में प्रवेश करने के पहले मुझमें स्वार्थीपन था। रेयूकाई शिक्षा के अभ्यास से मेरा स्वार्थीपन हटा है, औरों के दुःख और पीड़ा को महसूस किया हूँ। इस संस्था में प्रवेश करने के पश्चात् संस्था द्वारा आयोजित उद्घोषणा प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने का मौका प्राप्त कर मेरी अंतर्निहीत क्षमता का विकास हुआ। रेयूकाई के भव्य मिलन समारोहों में भाग लेने जाने के क्रम में मुझे रेयूकाई शिक्षा का ज्ञान, अनुशासन, सदस्यों के व्यवहार, पूर्वज स्मरण, कृतज्ञता की भावना आदि को नजदीक से समझने का मौका मिला। अपने ओया से सीख कर १४ सितम्बर २०११ के दिन अपने घर में सोकाईम्यो की स्थापना कर दैनिक पूर्वज स्मरण और सूत्रपाठ चढ़ाने का मौका प्राप्त किया। इससे मुझमें अतिरिक्त आत्मबल की बृद्धि हुई है।

अपनी लगनशीलता और प्रयास के कारण मैंने दो बार स्थिरमती पहाड़ में अभ्यास करने का मौका प्राप्त किया। वहां ओदाईमोकु की शक्ति के साथ ही यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी का प्रत्यक्ष मार्गनिर्देशन ग्रहण करने का मौका प्राप्त हुआ। स्थिरमती पहाड़ अभ्यास से लौटने के बाद मैं रेयूकाई शिक्षा विस्तार करते हुए अपने मिचिबिकी ओया का सहयोग प्राप्त कर अपने क्षेत्र में मिचिबिकी मिलनों का आयोजन करता आ रहा हूँ। उसी प्रकार अपने पढ़ने वाले कालेज में भी मिचिबिकी मिलन में सहभागी हुए अपने सहपाठियों और शिक्षकों को भी सदस्य बनाने का मौका प्राप्त किया। मैं कभी भी कालेज में नए साथियों को मिलने पर रेयूकाई की बातें किया करता था और सबके कारण मैं उनलोगों की नजरों में एक असल मित्र के रूप में स्थापित हो सका। इस प्रकार मैं आज इस स्थिति में हूँ, अन्यथा किस रास्ते में मैं कहां भटक गया होता, कोई पता नहीं था। अभ्यास के क्रम में यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी ने जलवायु परिवर्तन के बारे में काफी चिन्ता व्यक्त की थी और जलवायु परिवर्तन के कारण आज विश्व में विभिन्न प्रकार की समस्याएं दिखाई पड़ रही हैं, उन्हे कम से कम करना होगा, ऐसी भावना मुझमें जागृत हुई। उसी भावना के अनुसार मैंने विगत जनवरी २०१२ में यूराशिया रेयूकाई २२वीं शाखा द्वारा आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में सहभागी होने का मौका प्राप्त किया एवं मिलन समारोहों में जलवायु परिवर्तन संबंधी अनुभवों को व्यक्त करते हुए समाज में जन-चेतना विकसित करने के लिए क्रियाशील रहता आ रहा हूँ। साथ ही मुस्कानयुक्त चेहरे से अभिवादन, मुस्कानयुक्त चेहरे से कृतज्ञता तथा मुस्कानयुक्त चेहरे से प्रशंसा करने का मौका प्राप्त करता आ रहा हूँ।

मैंने अपने सदस्यों के घर-घर में सोकाइम्यो की स्थापना करने का मौका पाकर ५० से ज्यादा मिचिबिकी का पुण्यफल संचित कर विगत १० दिसम्बर २०११ को स्वयं अपने अंतर्गत के दो जन सदस्यों के साथ गोहोम्यो आत्माग्रहण समारोह में सहभागी होने का मौका प्राप्त किया। गोहोम्यो लिखने में पहले काफी दिक्कत हुई लेकिन गोहोजा को केन्द्रविन्दु बनाकर गोहोम्यो अच्छी तरह लिख सकने की कामना करने पर आज से कल और फिर कल से परसों अच्छा होता गया। इस तरह १०० दिनों के गोहोम्यो अभ्यास को १०० दिनों में ही पूरा करने का मौका प्राप्त किया। फिलहाल मैंने २८० जनों की मिचिबिकी, ६० सदस्यों के घर में सोकाइम्यो स्थापना एवं ३३ जन जुन-होजासु बनाने का मौका प्राप्त किया है।

रेयूकाई संस्था में प्रवेश करने के पश्चात् मेरे जीवन में काफी परिवर्तन आए हैं। दैनिक जीवनयापन के क्रम में मुस्कान को लागू कर कार्यान्वयन करने का मौका प्राप्त किया हूँ। फिलहाल मेरे व्यवहार और कार्यशैली को देखकर आसपास व पड़ोस की पहले की पंक्ति और आज की पंक्ति में आकाश-पाताल का फर्क है, ऐसा कहते हैं, जिसे सुनकर मैं गौरव महसूस करता हूँ। इस प्रकार मैं रेयूकाई सदस्य होने पर गर्व महसूस करने का मौका प्राप्त कर रहा हूँ। इस प्रकार सचमुच युवावर्ग को रेयूकाई शिक्षा देकर गांव, समाज, क्षेत्र, राष्ट्र और विश्व के विकास में आमूल परिवर्तन किया जा सकता है और ऐसा मैं महसूस करने का मौका प्राप्त कर निरन्तर रूप में मिलनों में सहभागी होने और मिचिबिकी करने के कार्य को निरंतरता देने का मौका प्राप्त कर रहा हूँ। इस पवित्र संस्था में अभ्यास करने का मौका प्राप्त करने के प्रति खुशी और गौरव लेकर मैं अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक होजाइन और जुन-होजाशु बनाते जाने की प्रतिज्ञा करता हूँ।

धन्यवाद, नमस्कार

श्री केदार नाथ मौर्य
होजाशु- यूराशिया रेयूकाई २२वीं शाखा

यूराशिया रेयूकाई में युवा का स्वरूप

स्वयम् अपने-आप को चमकाकर अपने घर-परिवार, समाज, देश और विश्व में योगदान दे सकने वाला व्यक्ति बनने के लिए प्रतिदिन रेयूकाई शिक्षा का कार्यान्वयन कर कार्यान्वयन कराकर परिणाम दिखाने वाला उदाहरणीय युवा बनें।

- औरों के जीवन को भी महत्व देते हुए औरों के लिए भी सोचने की भावना रखने वाला युवा बनें।
- हमेशा असंतुष्ट रहकर समाज से दूर न जाकर स्वयं क्रियाशील होकर, क्रियाकलाप करने का मौका पाकर, उजियाले भविष्य का निर्माण करते जाने वाला उत्साही युवा बनें।
- मुस्कानयुक्त चेहरे से सभी को हितैषी बनाकर ज्यादा से ज्यादा लोगों की भावना ग्रहण कर सकने वाला युवा बने।
- समाज, देश और विश्व को भविष्य की बातों पर विचार कर पूर्वजों के प्रति कृतज्ञ होकर स्वयं क्रियाशील होकर अपने देश के भविष्य को खींचते हुए विश्वशांति में योगदान पहुंचा सकने वाला युवा बनें।
- समाज परिवर्तन के संवाहक के रूप में हम एक-एक जन को लोकहितकारी बोधिसत्व बनने का लक्ष्य लेकर अभ्यास कर सकने वाला युवा बनना है।
- घर-परिवार की शांति और विश्वशांति को वास्तविक रूप में कार्यान्वयन कर सकने वाला युवा बनें।

बुद्ध जयंती तथा म्योईचिकाई (बाल-बालिका) मिलन

शाक्यमुनि बुद्ध की २५५६वीं जयंती के उपलक्ष में यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी की दया को ग्रहण करने का मौका पाकर विगत ६ मई २०१२ को यूराशिया रेयूकाई नेपाल और भारत की मिहाता शाखाओं तथा संस्कृति केन्द्रों के १,६२६ जन बाल-बालिकाओं तथा ६०६ जन अभिभावकों सहित कुल २५३२ लोगों की उपस्थिति में बेबी बुद्ध की प्रतिमा पर मीठी काली चाय उड़ेल कर म्योईचिकाई (बाल-बालिका) मिलन कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। मिलन में अभिभावक एवं बच्चों के बीच का सम्बन्ध, अभिभावक और पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने तथा शिष्टता के बारे में कार्यक्रम संयोजक द्वारा जानकारी करायी गयी। इस मिलन में यूराशिया रेयूकाई युवा विभाग द्वारा "युवा सामाजिक सेवा कोष" की स्थापना करने के उद्धेश्य से संचालित "जमा-पात्र वचत योजना" अंतर्गत उस दिन तक जमा की गयी जमा-पात्र की रकम को मिलन में उपस्थित बाल-बालिकाओं द्वारा फोड़े जाने का कार्यक्रम हुआ। सम्पूर्ण मिहाता शाखाओं तथा नेपाल स्थित विभिन्न संस्कृति केन्द्रों को मिलाकर इस योजना के पहले चरण में कुल ४५,६५६.६० नेपाली रूपये जमा हुए। उक्त संकलित रकम से प्राकृतिक आपदा के पीड़ितों को राहत उपलब्ध कराने का उद्धेश्य है।

यूराशिया रेयूकाई द्वारा सम्पन्न किए गए विभिन्न क्रियाकलापों की झलकियां:

यूराशिया रेयूकाई ११वीं शाखा, मधुमेह रोग तथा खाद्य सचेतनता कार्यक्रम (१६ मई २०१२, धोबीधारा, काठमांडू)

यूराशिया रेयूकाई १३वीं शाखा, युवा मिलन एवं महिला मिलन समारोह (२१ मई २०१२, बनियां, कैलाली)

यूराशिया रेयूकाई १५वीं शाखा, युवा सदस्य मिलन (४ फरवरी २०१२, विराटनगर)

यूराशिया रेयूकाई १७वीं शाखा, एक माह का वेटर्स प्रशिक्षण (२८ मई २०१२, सिद्धार्थनगर)

यूराशिया रेयूकाई २१वीं शाखा, अस्पताल में साफ-सफाई एवं फल-वितरण कार्यक्रम (१६ मई २०१२, सिलीगुड़ी)

यूराशिया रेयूकाई २२वीं शाखा, महिला मिलन (११ फरवरी २०१२, हरिहरपुर, कपिलवस्तु)

यूराशिया रेयूकाई २५वीं शाखा, रेयूकाई परिचयात्मक मिलन (१६ फरवरी २०१२, पनौती, काभ्रे)

यूराशिया रेयूकाई २८वीं शाखा, युवा सदस्य अभ्यास मिलन (१६ मार्च २०१२, अमरदह, मोरंग)

द रेयूकाई बांग्लादेश, बाल प्रतिभा कार्यक्रम (२६ मार्च २०१२, बांग्लादेश)

यूराशिया रेयूकाई म्यानमार, साफ-सफाई कार्यक्रम (म्यानमार)

यूराशिया रेयूकाई विजनबाड़ी संस्कृति केन्द्र, स्वास्थ्य शिविर तथा जनचेतना कार्यक्रम (१८ मई २०१२, विजनबाड़ी)

यूराशिया रेयूकाई विलासपुर संस्कृति केन्द्र, निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण (२० मई २०१२, विलासपुर)

यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष श्री युशुन मासुनागा जी द्वारा मनोनीत

श्री प्रवीण कुमार गुरूङ्ग एवं श्री भीम बहादुर गुरूङ्ग
यूराशिया रेयूकाई उपाध्यक्ष (८ अप्रैल २०१२)

श्री पंचम नारायण सिंह, श्री रोशन राज मुडभरी व श्री उमाशंकर पौड्याल
यूराशिया रेयूकाई प्रशासनिक बोर्ड पदाधिकारी (२० अप्रैल २०१२)

प्रकाशक
यूराशिया रेयूकाई
५८, डा० पारसमणि सरणी, सिलीगुड़ी, वार्ड नं० ४१
पश्चिम बंगाल, भारत
फोन: ००९१-३५३-२५४४७१६
फैक्स: ००९१-३५३-२५४४६०८

यूराशिया रेयूकाई योजना विकास
प्रकाशन समिति

कृपया इस पत्रिका को स्वयं पढ़कर औरों को भी पढ़ने का मौका दें।